



सौ वर्ष पूर्व जिले के जीव

(जंतुओं, पक्षियों और जलीय जीवन का संक्षिप्त विवरण एवं वर्तमान से उसकी तुलना)

जनपद शाहजहांपुर ऐतिहासिक समय से ही प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर रहा है। यहां ब्रिटिश काल में 70000 एकड़ भूमि पर घने वन थे। इसके अतिरिक्त पूरा नगर बागों से भरा हुआ था। जिले की दक्षिण सीमा पर ढाक के जंगलों की सीमाएं अवध राज्य तक विस्तृत थीं। ब्रिटिश गजेटियर यह स्पष्ट करता है की यह जंगल अनेक जंगली जीव - जंतुओं के आश्रय स्थल थे। यद्यपि अब इन जंगलों का क्षेत्र 5000 हेक्टेयर के आसपास ही शेष है। इसी प्रकार जनपद में प्रवाहित अनेकों जलधाराएं जलीय जीवन के लिए व्यापक संभावनाएं बनाती थीं।

उद्देश्य :-

1. जनपद शाहजहांपुर में सौ वर्ष पूर्व के जंगली जीव - जंतुओं के संदर्भ में जानकारी जुटाना।
2. वर्तमान समय में स्थानीय जीव - जंतुओं की प्रजातियों की कमी, जीवन संबंधी चुनौतियों के संदर्भ संक्षिप्त अवलोकन करना।
3. रोजा फैक्ट्री द्वारा पशुओं की नस्ल में सुधार हेतु किए गए प्रयासों को रेखांकित करना।
4. जनपद में सौ वर्ष पूर्व चिड़ियों की प्रजातियों की वर्तमान से तुलना और ऐतिहासिकता पर विचार करना।
5. जनपद में लगने वाले प्राचीन जानवरों के मेलों का वर्णन करना।
6. शाहजहांपुर में अफगानिस्तान संस्कृति के प्रभाव से श्रेष्ठ नस्ल के घोड़ों के आयात और व्यापार के ऐतिहासिक गौरव की पुनर्स्थापना करना।

विषय वस्तु :-

जिले में पीलीभीत तथा खीरी की तुलना में जंगली जीवों की संख्या कम रही फिर भी पॉइंट तहसील के जंगलों में जीवन के कुछ ऐसी विशिष्ट प्रजातियां हैं जो जिले को पश्चिमी जिलों बरेली तथा बदायूं से अलग करती हैं।

15वीं से 16वीं सदी तक जिले के उत्तर के जंगल बहुत ही सघन थे। यह कुमायूं जंगलों का प्रसार था। उस समय यह पूरा इलाका विश्व के दो तिहाई बारहसिंघा का घर था, तब यहां बाघ भी बहुतायत में पाए जाते थे किंतु शिकार के चलते जब बाघों की संख्या में आशातीत कमी आई तब पूरे जंगल पर भेड़ियों ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। ब्रिटिश गजेटियर जनपद को भेड़ियों का घर कहकर पुकारता है। इस समय बारहसिंघा ऊंचे पहाड़ों तथा नेपाल की तराई की ओर चले गए। शाहजहांपुर कांट तक भेड़ियों की भारी आमद थी।

अभी हाल ही में संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण विज्ञान विभाग के शोध में जिले के उत्तर के जंगलों की भूमि को बाघ प्रजनन के लिए सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। बाघ के संरक्षण के लिए 9



जून, 2014 को यहां पर पीलीभीत टाइगर रिजर्व की स्थापना की गई। जिसमें खुटार रेंज के हरिपुरा तथा की 1736 एकड़ भूमि को भी इसमें शामिल किया गया है। उस समय यहां बाघों की संख्या चौदह थी जो जब बढ़कर पैंसठ हो गई है। 18 वीं सदी तक पूरा इलाका बाघों की चहल कदमी से लबरेज था किंतु अंग्रेजी शिकार में प्रयुक्त होने वाली मचान तथा बैरल का मुकाबला बाघ नहीं कर पाए। सर जोसेफ फ्रेयर की पुस्तक रिकाल्शन ऑफ माय लाइफ के पृष्ठ संख्या 128 पर दिए गए विवरण से पता चलता है कि अंग्रेज अधिकारियों में बाघों के शिकार को लेकर अत्यधिक उत्साह था। यहां तक की शाहजहांपुर के जिला मजिस्ट्रेट रहे एम. रिकरेट की मदद से तकरीबन पचास बाघ वर्ष 1856-57 के में ही मार दिए गए थे। इस प्रकार रोटन पार्टी द्वारा सोलह तथा कर्नल प्लांट द्वारा बारह भागों के शिकार का वर्णन है। 1907 तक जो गजेटियर संकलन का काल था, तक क्षेत्र में बाघों की संख्या नगण्य हो गई थी। इनके संरक्षण पर ध्यान दिए जाने के बाद अब बाघों की संख्या में पर्याप्त बढ़ोतरी देखी जा रही है तथा मानव बाघ संघर्ष की खबरें भी आम हो रहीं हैं।

इन जंगलों में चार सींग वाला मृग यहां की विशिष्ट प्रजाति था। यद्यपि इस लुप्त हुए भी अब 100 वर्ष का समय बीत चुका है। इसके अतिरिक्त चीतल या चित्तीदार हिरण, हाथी, जंगली सूअर, लोमड़ी, खरगोश, सेही, यहां के अन्य जीव थे। नेपाली हाथियों की आमद से पूरा इलाका थरता रहता था।

गोमती के तट पर तेंदुओं की उपस्थिति बहुतायत में थी। यह इलाका तेंदुओं का आदिम निवास था। यहां तक कि आज भी उनकी चहलकदमी सैकड़ों किलोमीटर तक दर्ज की जाती है। शहर के कैट क्षेत्र में भी तेंदुआ अनेक दिनों तक उत्पाद मचाता रहा वन विभाग द्वारा उसे पकड़ने के पिंजरे भी लगाए गए किंतु उसका कोई नतीजा नहीं निकला।

संरक्षण के फलस्वरूप वर्तमान समय में यहां जंगली जीवों की पांच प्रमुख प्रजातियां बाघ, तेंदुआ, बारहसिंघा, हाथी, तेंदुआ सहित हाथी उड़त गिलहरी, हेयर फ्लोरीकन, हाथी, सूंस, बड़ी संख्या में दर्ज हैं।

रामगंगा के किनारे किनारे पहले ढाक के जंगलों में अपेक्षाकृत छोटे जीव बहुसंख्या में रहे। इनमें नील गाय आम है जबकि साधारण मृग, खरगोश, सियार, लोमड़ी, जंगली सूअर बहुतायत रामगंगा के किनारे किनारे देखे जाते हैं। वर्तमान में पूरा इलाका गहन कृषि के अंतर्गत लाया जा रहा है जिससे वन्य जीवों के परंपरागत आशियानों पर खतरा पैदा हो गया है।

शाहजहांपुर गजेटियर में जिले के सरीसर्पों तथा जलीय जीवों की सूची देता है। यहां के सर्प अपेक्षाकृत जहरीले हैं। इनमें कोबरा, कैरेट, कैट स्नैक, नाग, पाइथन, अजगर, मॉनिटर लिजर्ड अधिक संख्या में हैं। सर्प दंश से हुई मौतों की संख्या यहां जंगली जीवों के हमलों से हुई मानव मृत्यु से ज्यादा है।

जिले की नदियों, झीलों में समृद्ध जलीय जीवन था। रामगंगा तथा गंगा में घड़ियाल तथा मगर आम थे जबकि मछलियों में बिटू लोकप्रिय है जो सिलीगुड या सिप्रीगिनीड वंश की हैं। गर्म कभी मछली पालन की खान थी। छोटे तालाबों में भी मछली पालन बहुतायत में होता था। डाल्फिन जो कभी रामगंगा का गौरव थी, बहुतायत में देखी जाती थी। अब पुनः संरक्षण के फलस्वरूप इसकी आमद राम गंगा में बढ़ी है।



जनपद के पालतू पशुओं की प्रजातियों में कोई अच्छी किस्म की प्रजाति नहीं थी किंतु खीरी जनपद में स्थित परिहार अच्छी नस्ल के जानवरों के लिए विख्यात था। रोजा की केरु फैक्ट्री द्वारा जानवरों की नस्ल सुधारने के कुछ प्रयास किए गए। सन 1866 में तथा अगले वर्ष उनके द्वारा पंजाब से कुछ अच्छी नस्ल के बैलों को आयातित कर स्थानीय स्टाफ में सुधार के प्रयास हुए। यह प्रयोग अगले वर्ष भी जारी रहा किंतु इसका कोई खास परिणाम नहीं निकाला और प्रयोग अंततः असफल रहा। इसका मुख्य कारण आयातीत पशुओं में भिन्न जलवायु के साथ सामंजस्य बिठाने की क्षमता का अभाव था।

खन्नौत नदी की प्रतिष्ठा जानवरों के बड़े मेलों के लिए थी। जिले में अनेक स्थान पर नखासे लगते थे। जहां पशुओं का क्रय विक्रय किया जाता था। बकरी का विशेष आर्थिक महत्व था उनका दूध, मांस, कंबल बनाने में प्रयुक्त होने के लिए बाल इत्यादि के कारण यह व्यापक मूल्य की संपत्ति थी। जहां-जहां भेड़, बकरियां उपलब्ध थी वहां इनका उपयोग भूमि के लिए खाद बनाने में किया जाता था तथा चरवाहे इसके लिए छोटा सा शुल्क लेते थे।

सत्रहवीं सदी में जिला घोड़ों की नस्ल के लिए प्रसिद्ध था किंतु ब्रिटिश काल तक वह प्रतिष्ठा समाप्त हो गई थी। इन घोड़ों की अच्छी नस्ल की वजह अफगानिस्तान की रियाया थी जिन्होंने मध्य एशिया में बड़ी संख्या में घोड़े मंगवाए थे तथा जिनसे स्थानीय नस्ल में भी सुधार हुआ। ब्रिटिशकाल में जनपद इस क्षेत्र में पिछड़ गया। अनेक वर्षों तक जलालाबाद घोड़ों के कारोबार में अग्रणी रहा था।

इसी प्रकार जिला शाहजहांपुर चार सौ प्रकार की चिड़ियों का घर है। शाहजहांपुर गजेटियर इनकी उपस्थिति के बारे में विस्तार से वर्णन करता है। यहां काले तथा धूसर तीतर, मोर, बटवन, बड़ी मात्रा में है। इसके अतिरिक्त बत्तख, लाल चोंच वाली बत्तख, साफ पानी वाली बत्तख, कुक्कुट, गौरैया लंबे समय से जिले में उपस्थिति दर्ज कराती रही है। गौरैया बड़ी संख्या में तालाबों, पानी वाले दलदली स्थान के पास मिलती है। सर्दियों में जिले में अनेक प्रवासी पक्षी भी बड़े पैमाने पर देखे जाते हैं। ब्रिटिशकाल में उनकी उपस्थिति अभूतपूर्व थी।

गिद्धों की संख्या में कुछ दशकों से कमी पूरे देश में आ गई थी विशेष कर डाईपलैक्स दवा के कारण जो दर्द निरोध के रूप में उपयोग होती है। जनपद शाहजहांपुर में भी यह लंबे समय से नदारद रहे थे किंतु अब भारत सरकार द्वारा उक्त दवा की बिक्री पर रोक के क्रांतिकारी परिणाम सामने आए हैं। जिले में गिद्धों की संख्या में आशातीत बढ़ोतरी देखी जा रही है।

शाहजहांपुर के ककराकलां डंपिंग ग्राउंड में इजिप्शियन वल्चर के झुंड देखे जाना पर्यावरण विदों के लिए कोतूहल का विषय बना रहा है। इन गिद्धों को आईसीयूएन की रेड बुक डाटा में दर्ज किया गया है जो विलुप्त पक्षियों से संबंधित है। यह 99 तक मृत माने गए हैं। इसी के साथ गौरैया तथा बयां के घोंसले भी बड़ी संख्या में इस समय जिले विशेषकर पुवायां क्षेत्र में देखे जा रहे हैं। मोरों की संख्या हालांकि पहले जितनी नहीं है किंतु क्षेत्र एवं शहर से सटे अनेक गांवों में उनकी अच्छी संख्या है, विशेषकर संरक्षण के कारण।

जनपद में हर वर्ष अक्टूबर से मार्च तक पूर्व की भांति विदेशी पक्षियों का तांता लगा रहता है। इनमें बर्ड डीटा, फ्लाई कैंचा, व्हाइट टेल ईगल, व्हाइट स्ट्रोक, गाडविट, ग्रेन्लेग, नॉर्दर्न शावलर प्रमुख हैं। बहादुरपुर हाल्ट की झील का विवरण यहां अपेक्षित है जहां सदियों से हर वर्ष विदेशी



पक्षी आते थे किंतु 1993 में तत्कालीन जिलाधिकारी भागवत प्रसाद मिश्रा ने गवत इन पक्षियों के लिए झील पर कुछ पक्का निर्माण करवाकर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की कोशिश की किंतु मानवीय हस्तक्षेप में पक्षियों का मुंह भंग कर दिया और उन्होंने यहां डेरा डालना लगभग बंद ही कर दिया है। सामुदायिक सहयोग की दृष्टि से शहर के नागरिक पक्षियों के प्रति सहानुभूति पूर्ण व्यवहार रखते हैं। पंकज बाथम द्वारा अपना एक निजी चिड़ियाघर विकसित किया गया है वही अलीजई इलाके के रहने वाले मोहम्मद इकराम के घर पर 150 लव बर्ड, तोता अन्य पक्षी बहु संख्या में है। ऑस्ट्रेलियाई फाख्ता इनमें सबसे छोटी चिड़िया है। जन समुदाय द्वारा हर वर्ष गर्मियों में चिड़ियों के लिए घर की छतों पर दाना पानी की मुहिम चलाई जाती है।

सारस उत्तर प्रदेश का राष्ट्रीय पक्षी है जनपद में अब इसकी संख्या 1800 के पार पहुंच गई है। जनपद के पांच वन रेंज में करीब 800 दलदली भूमि क्षेत्र हैं इनमें 150 ऐसे हैं जहां सारस तेजी से बढ़े हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि ब्रिटिश काल में जिले में समृद्ध वन्य एवं जलीय जीवन मौजूद था। जंगलों की अवैध कटान के कारण जीव - जंतुओं के संरक्षण की दिशा में गंभीर तथा आसन्न संकट उत्पन्न हुए हैं। मानव समाज में जागरूकता उत्पन्न कर ही पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा की जा सकती है।

स्रोत :-

1. ब्रिटिश गजेटियर, 1910 : हेनरी रिवर्स नेविल्स ।
2. जनपद गजेटियर शाहजहांपुर, 1988 : कैलाश नारायण ।
3. तारीख - ए शाहजहांपुरी ।
4. सफारी एडवेंचर : विलर्ड प्राइस ।
5. इंडियन फॉरेस्ट मेमोरीजरू आर. एस. द्रूप, 1910
6. वन्यजीवों पर प्रशासनिक रिपोर्ट : 1882
7. जिला वन विभाग द्वारा जीवजंतुओं तथा पक्षियों की जनसंख्या संबंधी आंकड़ों की रिपोर्ट, विशेष. कर सारस के संदर्भ में, 2025-26।